आईएडी-लिम्फैटिक फाइलेरिया रोगियों के लिए

आशा की किरण

...✍ मनोहर यडवट्टि

केरल के कासरगोड में स्थित एप्लाइड डर्मेटोलॉजी संस्थान (आईएडी) लिम्फोडिमा और त्वचा रोगियों के लिए एकीकृत चिकित्सा के रूप में यह एक विश्व प्रसिद्ध अस्पताल है, जो देश और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के मरीजों की मांग पर बना है। यह पूरे देश में एकमात्र ऐसा अस्पताल है जो आयुर्वेद, होम्योपैथी, योग के अलावा अन्य पारंपरिक विधियों और आधुनिक चिकित्सा के साथ संयुक्त रूप से राहत और समाधान प्रदान करता है।

दो दशकों से अधिक के समय में प्राथमिक त्वचाविज्ञान के इस अस्पताल में भारत और यूरोपीय अनुसंधान के अलावा अब तक लगभग 10,000 से अधिक मरीजों के इलाज किए जा चुके हैं। इस तरह आईएडी एक छोटी क्लीनिक से देश के प्राथमिक त्वचाविज्ञान अस्पताल में बदल गया है। वास्तव में यह चिकित्सा संस्थान त्वचा से संबंधित बीमारियों यथा- लिम्फैटिक (फाइलेरियासिस) फाइलेरिया, विटिलिगो, सोरायसिस, लाइकेन प्लैनस, घाव देखभाल, वार्ट और हेमिप्लेगिया(पक्षाघात) के विभिन्न रूपों के लिए एकीकृत उपचार प्रदान कर रहा है।

> लिम्फैटिक फाइलेरिया को सामान्यता एलिफैंटियासिस या हाथीपांव, के रूप में जाना जाता है। इस बीमारी के चपेट में लगभग 80 देश हैं।

मरीजों की सघन जांच और मूलभूत शोध के आधार पर ही आईएडी उनके इलाज में विश्वास करता है। त्वचा से संबंधित अध्ययन और उपचार में सहयोगी के रूप में कासरगोड सेंट्रल यूनिवर्सिटी का योगदान अतुलनीय है। लिम्फैटिक फाइलेरिया को सामान्यता एलिफैंटियासिस या हाथीपांव, के रूप में जाना जाता है। इस बीमारी के चपेट में लगभग 80 देश हैं। जबकि 50 के दशक में जापान से यह बीमारी पूरी तरह से खत्म हो चुकी है। फिलहाल ओडिशा भी अपने को इससे मुक्त घोषित कर चुका है।

विशेषकर तटीय राज्यों एवं बिहार समेत 20 राज्यों में लगभग 2.6 करोड़ लोग लिम्फैटिक फाइलेरिया बीमारी से पीड़ित हैं। लेकिन चिकित्सा आंकड़ों के मुताबिक आधिकारिक तौर पर यह संख्या काफी कम लगभग 70 लाख है। जब सरकार ने देश से कुष्ठरोग के पूरी तरह समाप्ति की घोषणा की थी, उस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने लिम्फैटिक फाइलेरिया के मामले में संदिग्ध दावों को लेकर सरकारी एजेसिंयो पर सख्त नाराजगी जाहिर की थी।

आमतौर पर इस बीमारी की शुरूआत में कोई लक्षण दिखाई नहीं देते हैं इसके बावजूद यह शरीर को बदसूरत कर देती है। कई मामलों में बिना किसी लक्षण के भी यह लसीका तंत्र को क्षतिग्रस्त भी कर देती है। लिम्फैटिक फाइलेरिया संक्रमित मच्छर के काटने से होता है। जिसके परिणामस्वरूप लिंफ (लसीका) अंगों में सूजन आने से लंबे समय के लिए जीवन कष्टकारी हो

जाता है। बाद में लगातार संक्रमण के प्रभाव से स्थिति दयनीय और दैनिक दिनचर्या संघर्षपूर्ण हो जाती है।

बाह, पैर और पुरुषों में अंडकोष (हाइड्रोसील) के आसपास सूजन आना इसके लक्षणों में शामिल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार लिम्फैटिक फाइलेरिया दुनिया में शारीरिक अक्षमता का दूसरा प्रमुख कारण है। लेकिन दुर्भाग्यवश अपर्याप्त विकल्पों और शोध की कमी के चलते यह फील्ड उपचार के लिए अभी सीमित दायरों में है। इसके बावजूद आईएडी ने स्वतंत्र रूप से अपने स्तर पर मरीजों की देखभाल, शोध एवं सघन जांच के आधार पर एक चिकित्सा विकसित कर ली है। और यह सब आयुर्वेद, होम्योपैथी, योग और एलोपैथी के जैव-औषधि के जरिए मिले परिणाम यानी यह उपरोक्त के संयोजन से संभव हुआ है।

केरल सरकार और प्रोफेसर टेरेंस रयान, त्वचा विज्ञान विभाग, ऑक्सफोर्ड मेडिकल स्कूल, यूके के सहयोग और समर्थन से उपचार की यह अनोखी विधि आईएडी द्वारा विकसित की गई है। दिलचस्प बात यह है कि डब्ल्यूएचओ दुनियाभर में इस चिकित्सा की सलाह दे रहा है। प्रोफेसर टेरेंस रयान ने त्वचा रोगों के अनुसंधान और उपचार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है। उनकी पारंपरिक विधियों के साथ आधुनिक चिकित्सा प्रणालियों को एकीकृत करने की धारणा ने उन्हें दुनियाभर में प्रसिद्ध बना दिया है। प्रोफेसर टेरेंस रयान लंबे समय से आईएडी के सलाहकार रहे हैं। और वास्तव में उन्हीं की बदौलत आज आईएडी अनुसंधान में उत्कृष्टता के इस मुकाम पर है।

आईएडी के डॉक्टरों ने लिम्फोडिमा के एकीकृत उपचार पर 30 से अधिक अंतरराष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। और यही उन्हीं के मार्गदर्शन में ही संभव हो पाया है। इस तरह उनका योगदान लिम्फोडिमा और आईएडी के लिए अभूतपूर्व है। सन 1990 से कासरगोड में एक ख्यातिप्राप्त त्वचा विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. एसआर नरहरी, मरीजों के इलाज के लिए सेवारत हैं। वह इस एकीकृत चिकित्सा संगठन, आईएडी के निदेशक हैं। उन्होंने नौ अन्य वरिष्ठ चिकित्सकों के साथ मिलकर आईएडी को स्थापित किया था। डॉ एसआर नरहरी और उनकी टीम के अथक प्रयास से यह संभव हुआ है। 2010 में डब्ल्यूएचओ अपने एक प्रकाशन में लिंफोलॉजी क्लीनिक की एकीकृत चिकित्सा के लिए आईएडी के नाम की चर्चा कर चुका है।

केरल सरकार ने साल 2014 में त्वचाविज्ञान से संबंधित कार्यों के लिए आईएडी में पीपीपी मॉडल यानी सार्वजनिक-निजी साझेदारी के तहत एकीकृत चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की। त्वचा विशेषज्ञ डॉ एसआर नरहरी और पत्नी केएस प्रसन्ना दोनों आईएडी में मरीजों की देखभाल के लिए तत्पर रहे हैं। आईएडी के बाहर भी दोनों का जीवन जरूरतमंद मरीजों के लिए समर्पित रहा है। ये दंपति आईएडी में मरीजों की देखभाल के बदले में अस्पताल से कोई वित्तीय लाभ नहीं लेते हैं।

इन सबके बीच सबसे बड़ी चिंता जो उन्हें परेशान करती है वह है अनुसंधान परीक्षणों के संचालन के लिए धन की कमी। इसके अलाव 10,000 फाइलेरिया के रोगियों का एक बड़ा डाटा, आईएडी जल्द ही सर्वर पर डालने की योजना बना रहा है। इस दर्दनाक बीमारी से संबंधित इतनी जानकारी समूचे विश्व में कहीं और आपको नहीं मिलेगी।

इस आंकड़ों के जरिए मरीजों और बीमारी से संबंधित तथ्य को जानने के लिए इसका विश्लेषण किया जा सकता है। लेकिन इसमें वित्तीय संकट भी बाधा बन गया है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती और खतरा है वास्तविक शोध पत्रों और जानकारियों की चोरी की। डॉ एसआर नरहरी ने कहा कि इस तरह के मामलों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। देश में प्रचलित एक विरोधाभासी समस्या यह भी है कि जो कुछ भी डब्ल्यूएचओ प्रकाशित करता है उसे समाचार माना जाता है। और दूसरी ओर पारंपरिक और कम कीमतों के जरिए किए जाने इलाज को दवा उद्योग ने विफल कर दिया है। ◆◆◆

अनुवादः **राम जी तिवारी**